संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : २३ ● ०४ जुलाई २०१७ आषाढ़ शुक्ल पक्ष एकादशसी संवत् २०७३ ● दयानन्दाब्द १६२ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

हैदराबाद सत्याग्रह में आर्य समाज की अहम भूमिका

आर्य समाज पिलखुआ का वार्षिक सम्मेलन एवं जिला आर्य महा सम्मेलन सम्पन्न हुआ-

सभा प्रधान डॉ. धीरज सिंह जी का उद्‌बोधन हुआ- आपने आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का विस्तार से वर्णन करते हुए आर्य बलिदानियों का आभार व्यक्त किया और आर्य जनता को प्रेरणा प्रदान की।

सभा प्रधान जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि आर्य समाज का अतीत गौरवशाली रहा है। उन्होंने अपने रक्त से दयानन्द की वाटिका को अभिसिंचित किया है जिसकी शीतल छाया में हम शान्ति प्राप्त कर रहे हैं एवं उसके सद्‌गुण रूपी फलों का आस्वादन की रहे हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के हमारे ऊपर महान् उपकार हैं कई जन्मों तक वेद प्रचार करके ही उनके ऋणों को हल्का किया जा सकता है, उबारा नहीं जा सकता। उन्होंने बताया वर्ण व्यवस्था और आश्रम व्यवस्था से ही समाज में समानता और एक रूपता आ सकती है। जिला आर्य महा सम्मेलन जिले के समस्त आर्यो के जीवन में नवीन रक्त का संचार करेगा ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। अशोक आर्य, ज्ञानेन्द्र चौ., विकास आर्य, रवीन्द्र उत्साही जैसे युवाओं पर आर्य समाज को गर्व है। आर्य समाज को युवा बनाने के लिए आर्य वीर दल की शाखा और शिविर की व्यवस्था करनी होगी। सभी आर्य इस दिशा में अपने बच्चों को प्रेरणा देकर आर्य समाज में आने की प्रेरणा करें। बच्चों में नशे की बुराई फैल रही है उसे समूल नष्ट करना है। आपके सहयोग से उ.प्र. सभा ने नव वर्ष शराब बन्दी आन्दोलन का शुभारम्भ किया है इसके लिए आप सदैव अपने स्तर से जनमानस को प्रेरणा प्रदान करते रहें। ग्राम स्तर पर प्रचार योजना बनावें। पूरे प्रदेश में एक उत्साह का वातावरण तैयार करें, मै आर्य समाज पिलखुवा एवं जिला सभा हापुड़ के समस्त अधिकारियों को धन्यवाद देता हूँ। आपने इतना सुन्दर विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया है प्रभु से प्रार्थना है आप महर्षि के मन्तव्यों के प्रचारार्थ आपको शक्ति प्रदान करें। इससे पूर्व सभा मंत्री अशोक आर्य एवं रवीन्द्र उत्साही, रघुवीर सिंह आर्य, शमशेर सिंह आर्य, धर्मपाल सिंह आर्य, कपिल आर्य, राजपाल सिंह, गंगाशरण सिंह प्रधान जी ने सभा प्रधान जी का स्वागत किया। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी भी मंच पर उपस्थित रहे। हरि शंकर अग्निहोत्री आगरा एवं सचिन आर्य के सुन्दर प्रवचन एवं गीत हुए-आचार्य प्रमोद, वेद प्रचार अधिष्ठाता, हापुड़ आदि महानुभाव वार्षिक सम्मेलन में उपस्थित रहे। ●●●

वेदामृतम्

उपक्षेतारस्तव सुप्रणीते, अग्ने विश्वानि धन्या दधानाः।
सुरेतसा श्रवसा तुज्जमानाः, अभि ष्याम पृतनायूँरदेवान्।। ऋग् ३.१.१६,

हे अग्ने ! हे तेजोमय परमात्मन् ! तुम 'सुप्रणीति' हो, उत्कृष्ट प्रगतिशील नीतिवाले हो। तुम जिस नीति से स्वयं चलते हो तथा हम मानवों का मार्गदर्शन करते हो, वह तुम्हारी नीति हम अल्पशक्ति मनुष्यों के लिए बडी ही वरदा सिद्ध होती है। हे करुणा-वरुणालय परमेश ! तुम्हारी शुभ प्रकृष्ट नीति का वरण करने के लिए हम चाहते हैं कि हम तुम्हारे समीपवर्ती हो जायें, क्योंकि बिना तुम्हारे सामीप्य के तुम्हारी प्रकृष्ट नीति, तुम्हारा सुन्दर उत्कृष्ट मार्गदर्शन हमें प्राप्त नहीं हो सकता। जब हम तुम्हारे साथ सामीप्य स्थापित कर लेंगे तब स्वभावतः हम दुष्कर्मो से मुक्त होकर धन्य कर्मो को धारण कर लेंगे, क्योंकि तुम स्वयं धन्य कर्मों को ही धारण करने वाले हो। हे प्रभो ! हम चाहते हैं कि हम तुम्हारी कृपा से 'सुरेताः' बने, उत्कृष्ट बल, धीर्य और सामर्थ्य से युक्त हों, ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी बने। पर 'रेतस्' का अर्थ केवल शारीरिक वीर्य-शक्ति ही नहीं है, रेतस् का अर्थ आत्मिक बल भी है। शारीरिक रेतस् आत्मिक रेतस् की प्राप्ति और वृद्धि में सहायक बनता है। हम शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार के रेतस् से समन्वित हों। इसके साथ ही हम 'श्रवः' को भी प्राप्त करें। 'श्रवः' का जहाँ एक स्थूल अर्थ शास्त्रश्रवण है, वहाँ साथ ही अन्तरात्मा की दिव्य वाणी के श्रवण को भी 'श्रवः' कहते हैं। इस द्विविध 'श्रवः' को भी हम धारण कर लें।

इस प्रकार जब हम परमात्मा के समीपवर्ती, धन्य कर्मों को धारण करने वाले, 'सुरेताः' और 'सुश्रवाः' बन जायेंगे, तब कोई भी दुष्ट वृत्ति हमारे अन्दर नहीं टिक सकेगी। अतः आओ, हम समस्त दुष्ट वृत्तियों के प्रति तीव्र अभियान आरम्भ करें। पवित्र मनोमन्दिर को कलुषित करने वाले तथा हमें दुर्बल मानकर हम पर सशस्त्र आक्रमण करके हमें दबाये लेने वाले 'अदेवों' वृत्तियों को, तीव्रता के साथ पराजित कर देवें।

हे अग्निमय प्रभो ! तुम हमारे अन्दर ऐसी आग्नेय शक्ति उत्पन्न कर दो कि हम आग के शोले बनकर 'अदेवों' पर टूट पडें और उन्हें क्षत-विक्षत, विध्वस्त एवं विदग्ध करके ही चैन लें और संघर्ष में विजयी बनकर देवत्व प्राप्त कर, गर्वोन्नत सिर के साथ जीवन-संग्राम में आगे ही आगे बढते रहें।

वैदिक उर्वशी, पुरुरवा एवं मित्रावरुण का रहस्य

- सूर्य देव चौधरी

ऋग्वेद के दसवें मंडल के ६५ वें सूक्त में उर्वशी एवं पुरुरवा का संवाद मिलता है, जबकि ऋग्वेद के ही सातवें मंडल के ३३ वें सूक्त में उर्वशी एवं मित्रावरुण के सम्बन्ध का वर्णन है। पहले उर्वशी एवं पुरूरवा से सम्बद्ध एक मंत्र यहाँ उद्धृत किया जा रहा है, जो इस प्रकार है -

विद्युन्न या पतन्ती दविद्योत् भरन्ती में अप्या काम्यानि।
जनिष्टो अपो नर्यः सुजातः प्रोर्वशी तिरत दीर्घमायुः ।। ऋ. १०/६५/१०

अर्थात् जो विद्युत के समान गिरती हुई, चमकती हुई, मेरी कामनाओं को जल रूप में पूर्ण करती है, वह जल से उत्पन्न अथवा जल को उत्पन्न करने वाली उर्वशी अच्छी प्रकार प्रकट होकर मनुष्यों के लिए दीर्घ आयु को देती है।

इस स्थल पर और ऐसे ही कई अन्य स्थलों पर वेदों के कुछ भाष्यकार मानवीय इतिहास की कल्पना कर लिए हैं, जो उनके लौकिक एवं वैदिक संस्कृत के भेद एवं वेदार्थ शैली से अनभिज्ञता को सूचित करता है। इतना ही नहीं, कुछ लोग तो इस सलि को विश्व की प्रथम प्रेम-कथा तक कहने की धृष्टता की है। ऐसे लेखक नहीं जानते है कि वेद वैदिक भाषा में हैं, लौकिक संस्कृत भाषा में नहीं तथा वेदों के शब्द यौगिक होते हैं, लौकिक संस्कृत की तरह रूढ़ि नहीं। देखने में समान प्रतीत होने वाली लौकिक एवं वैदिक संस्कृत में काफी अन्तर है। अतः लौकिक संस्कृत के आधार पर वैदिक मंत्रों का ठीक-ठीक अर्थ नहीं किया जा सकता। वेद मंत्रों के यथार्थ को समझने के लिए निरुक्त एवं निघंटु का ज्ञान आवश्यक है। आगे हम निरुक्त एवं निघण्टु के आलोक में उपरोक्त उर्वशी एवं पुरुरवा के संवाद को समझने का प्रयास करते हैं।

पहले हम देखते हैं कि उर्वशी क्या है ? निरुक्त ११/२२ में मध्यस्थानी स्त्री देवताओं का वर्णन पाया जाता है, जिसमें अदिति से रोदसी तक का वर्णन है। इसी में उर्वशी का भी वर्णन है, जिससे यह प्रतीत होता है कि उर्वशी कोई मध्यस्थानी यानी अन्तरिक्षस्थ पदार्थ विशेष है, ऐतिहासिक नारी नहीं। इसी क्रम में निरुक्त ११/३५ पर उर्वशी पद की व्याख्या की गई है। वहाँ तर्क एवं प्रमाण सहित दिखलाया गया है कि उर्वशी मेघस्थ विद्युत है। इसके अतिरिक्त अन्यत्र भी उर्वशी को विद्युत ही कहा गया है। निरुक्त ५/१४ पर अपने भाष्य में स्कन्द स्वामी लिखते हैं कि नित्यपक्ष में उर्वशी विद्युत है- 'नित्यपक्षे तु उर्वशी विद्युत् वशिष्ठोऽप्याच्छादिल उदक संघातः'। यहीं पर वे आगे कहते हैं कि विशेष रूप से चकमने वाली विद्युत ही उर्वशी है- ' विशेषेण द्योतते इति विद्युत उर्वशी'। स्कन्द स्वामी अन्यत्र भी निरुक्त १०/४६ पर अपने भाष्य में उर्वशी को मध्यस्थानी यानी अन्तरिक्षस्थ विद्युत ही कहते हैं- 'उर्वशी मध्यस्थाना विद्युत'। आचार्य वररूचि के निरुक्त

क्रमशः पृष्ठ.....५पर

डॉ. धीरज सिंह आर्य
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

चीन की दादागिरी

भारत की विश्व में बढ़ती चमक-धमक एवं उसकी भागीदारी से विश्व के कई देशों की बेचैनी बढ़ गई है। विश्व स्तर पर भारत ने अपनी पहचान बनायी और उसके कई कार्यो की सराहना की गयी। उससे भारत के प्रतिद्वन्दियों की नींद हराम हो गई है। उसी की बौखलाहट का परिणाम है कि चीन ने प्रति वर्ष होने वाली यात्रा पर रोक लगा दी है। चीन भारत के बढ़ते वैश्विक स्तर से काफी परेशान है। वह लगातार भारत के लिए घातक पाकिस्तान का समर्थन करता है। वह पाकिस्तान को मदद करके भारत की अखंडता को नुकसान पहुंचाना चाहता है। चीन प्रारम्भ से भारत से ईर्ष्या करता रहा है, रिश्तों के उतार-चढ़ाव के बीच चीन से व्यापार आवागमन व संबंध भारत के रहे हैं। इसी काल खंड में भारत चीन का युद्ध भी हुआ जिसमें भारत को नुकसान उठाना पड़ता। भारत की उदारवादी सोंच ने देश को नुकसान देकर अमन चैन की कामना की परन्तु चीन की विस्तारवादी योजना भारत के लिए घातक हमेशा रही है। भारत समता सर्वसमभाव का उपासक रहा है उसी के कारण भारत ने भारत चीनी भाई-भाई का नारा भी दिया। उसका भी परिणाम भारत को देखने को मिला। चीन की विस्तार वादी सोच से उसके पड़ोसी देश परेशान हैं। अपनी कार्य प्रणाली से वह लगातार भारत को परेशान करता है। चीन पिछले दिनों से भारतीय सीमाओं का अतिकृमण कर भारतीय जवानों के साथ बदसलूकी कर रहा है। भारत की सेना धैर्य एवं संयम के साथ उसका मुकाबला कर रही है। विगत दिनों डोकलाम (भूटान) में भारतीय जवानों से चीनी सैनिकों से हाथपाई की उसका जवाब भारतीय सैनिकों ने पुरजोर तरीके से दिया। उसके बाद चीन ने भूटान की तरफ बने बंकरों (कोड नेम लालटेन) को ध्वस्त कर दिया। वह लगातार सीमा पर भारत के सैनिकों को उकसाता रहा है। चीन की खीझ अब वार्षिक यात्रा पर देखेने को मिल रही है। उसकी शर्तो को निराधार मानते हुए सरकार को उचित कदम उठाने की जरूरत है। चीन को अपने रवैये को बदलना चाहिए तथा पड़ोसी देशों के साथ सही बर्ताव करना चाहिए। चीन को समझना चाहिए सब कुछ बदला जा सकता है परन्तु पड़ोसी नहीं। चीन को यह भी समझ लेना चाहिए कि भारत के बढ़ते कदम को कोई भी नहीं रोक सकता। वह लगातार प्रगति करता रहेगा। हम उन्नति के साथ शान्ति के उपासक है यदि हम शान्ति का व्यवहार करते हैं तो हम आशा करते हैं कि दूसरा भी हमारे साथ यही व्यवहार करे। भारत अपनी एकता अखंडता संप्रभुता बनाये रखने में सक्षम एवं सशक्त है।

-सम्पादक

आर्य वीर दल जिला बागपत का शिविर सम्पन्न

आर्य ग्राम पलड़ी जि. बागपत में आर्यवीर दल का जिला स्तरीय शिविर का आयोजन किया गया शिविर में १२५ आर्यवीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। स्वामी देवव्रत सरस्वती की अध्यक्षता रही, डॉ. धीरज सिंह सभा प्रधान मुख्य अतिथि एवं सभा मंत्री स्वामी जी विशिष्ट अतिथि समापन समारोह में रहे संयोजन रामगोपाल आर्य ने किया। कार्यक्रम में आर्यवीरों का व्यायाम प्रदर्शन प्रभावशाली रहा पुरस्कार वितरण मु. अतिथि एवं स्वामी जी द्वारा किया गया। सभा में क्षेत्र के सभी गणमान्य आर्य उपस्थित रहे प्रि. रामपाल सिंह जी बड़ौत के अलावा क्षेत्रीय नेता भी उपस्थित थे सभा प्रधान जी का उद्बोधन प्रभावशाली रहा तथा शिविर के लिए ५,१००/- रूपये नकद देकर आर्यवीरों को आशीर्वाद दिया। पलड़ी ग्राम आदर्श ग्राम योजनान्तर्गत सांसद सत्यपाल सिंह द्वारा चयनित ग्राम है इस ग्राम के १० शिक्षक आर्यवीर दल के लिए पूरे देश में भ्रमण कर रहे हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य समर सिंह आर्य ने सभी का धन्यवाद किया और आर्यवीर दल का कार्य उत्साहपूर्वक करने की प्रेरणा प्रदान की।

-धर्मवीर सिंह आचार्य शिक्षक
महामंत्री-आर्यवीर दल उ.प्र. एवं
अन्तरंग सदस्य-आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

प्रेषक,

उपनिबन्धक,
फर्म्स, सोसाइटीज एवं चिट्स,
लखनऊ मण्डल लखनऊ।

सेवा में,

कार्यवाहक प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0,
5 मीराबाई मार्ग , लखनऊ ।

पत्रांक : 1324 / I – 72 लखनऊ::दिनांक: 22.06.2017 जून 2017

विषय : संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 लखनऊ के सम्बन्ध में ।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक इस कार्यालय में श्री देवेन्द्र पाल वर्मा का पत्र दि0 20.6.17 जो कार्यालय में दि0 22.6.17 को प्राप्त का संदर्भ ग्रहण करें । श्री देवेन्द्र पाल वर्मा द्वारा अपने पत्र में उल्लेख किया है कि प्रार्थी संस्था की पंजीकृत सूची के आलोक में प्रधान है तथा कार्यालय आदेश दि0 9.11.16 द्वारा कार्यवाहक प्रधान डा0 धीरज सिंह को बनाया गया है जबकि मा0 उ0 न्यायालय में योजित रिट याचिका संख्या 10563/2017 विचाराधीन है । मै संस्था के परिसर में एक कक्ष में निवास कर रहा हूँ । मेरे बाहर जाने पर डा0 धीरज सिंह द्वारा मेरे कमरे में ताले के ऊपर ताला लगा दिया है यह कृत्य मौलिक अधिकार का हनन है ।

उपरोक्त पत्र के आलोक में आपको निर्देशित किया जाता है कि जब तक संस्था का वाद प्रधान पद को लेकर मा0 उ0 न्यायालय में विचाराधीन है तब तक श्री देवेन्द्र पाल वर्मा के कक्ष में ताला न डाला जाए उन्हे अग्रिम आदेशों तक रहने दिया जाए ।

भवदीय,

उपनिबन्धक

[redacted] / I – 72 लखनऊ::दिनांक:

प्रति[redacted] उ0प्र0, 5 मीराबाई मार्ग ,
लखन[redacted] ।

उपनिबंधक

Court No. - 5

Case :- MISC. SINGLE No. - 14219 of 2017

Petitioner :- Dr Dheeraj Singh
Respondent :- Registrar Firms Societies & Chits Lko & Ors
Counsel for Petitioner :- Anurag Srivastava
Counsel for Respondent :- C.S.C

Hon'ble Anil Kumar,J.

Heard Sri Anurag Srivatava, learned counsel for petitioner, learned State counsel on behalf of respondent Nos. 1 & 2 and perused the record.

Issue notice to respondent No. 3.

Learned counsel for petitioner petitioner for the purpose of interim relief submits that the impugned order dated 22.06.2017 passed by respondent No. 2 is contrary to the order dated 15.05.2017 passed in writ petition petition No. 10560 (MS) of 2007 (Arya Pratinidhi Sabha Vs. State of U.P. & Ors.), which has already been affirmed vide order dated 25.05.2017 passed in Special Appeal No. 228 of 2017 (Arya Pratinidhi Sabha & Anr. Vs. State of U.P. & Ors.), so the same is liable to be stayed.

After hearing learned counsel for petitioner and going through the record, prima facie submission made by learned counsel for petitioner appears to be correct, as such till the next date of listing, further operation and implementation of the order dated 22.06.2017 (Annexure No. 18) shall remain stayed.

Learned State counsel prays for and is granted four weeks time to file counter affidavit. Two weeks' thereafter is granted to file rejoinder affidavit.

List thereafter.

Order Date :- 28.6.2017

Ravi/

अन्तरंगाधिवेशन सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक-23 जुलाई, 2017 रविवार (श्रावण कृष्ण अमावस्या) को प्रातः 11 बजे से आर्य समाज शवायजपुर, पोस्ट-शवायजपुर, तहसील-शवायजपुर, जिला-हरदोई में कार्यवाहक प्रधान-डॉ0 धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी। एजेण्डा एवं विस्तृत कार्यकमों की रूप-रेखा सभी को डाक द्वारा भेज दी गई है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें। आर्य समाज शवायजपुर हरदोई से फर्रूखाबाद के रास्ते में सड़क पर पड़ता है।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मन्त्री

धरोहर.....

वेद-वेदांगों के प्रमाण पुरुष-

वैदिक विद्वान् पं. युधिष्ठिर मीमांसक

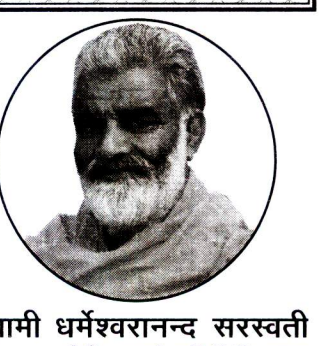

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

भारतीय वेशभूषा में सुसज्जित, सिर पर काली टोपी में शोभायमान विद्वत्ता की प्रतिमूर्ति, प्रमाणज्ञ पुरूष, व्याकरण शास्त्र के इतिहास लेखक, महर्षि दयानन्द सरस्वती परम्परा के पोषक एवं उन्नायक, गुरूपरम्परा में आर्षपरम्परा से तीसरी पीढ़ी के परिषेक्ता, आर्य वैदिक विद्वद् वरेण्य, स्वनाम धन्य पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक का नाम सुनते ही उनका दिव्य स्वरूप दृष्टिगोचर होने लगता है। उनकी मृदुवाणी, जीवन की सरलता तथा वैदुष्ययुक्त संस्कृत भाषा पर मानों आधिपत्य स्थापित कर लिया था, मुझे स्मरण आ रहा है जब मैं बाल्यावस्था में ही था और आर्ष परम्परा को भारत वर्ष में विस्तारित करने का संकल्प लिया जा चुका था भारत के आर्ष गुरूकुलों का एकीकरण करके संगठन द्वारा श्री दयानन्द आर्ष विद्यापीठ नाम से गुरूकुल भज्जर को केन्द्र बनाया गया था, वर्ष १९६६ से १९६८ तक कं बार बैठकें, विचार-विनिमय तथा पाठ्यक्रम का निर्धारण नियमावली संविधान आदि वैधानिक प्रक्रिया के लिए आर्य जगत के वैदिक विद्वान् एवं आर्य सन्यासी कभी गुरूकुल झज्जर कभी गुरूकुल ततारपुर में पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तत्कालीन तपोधन भगवान देव आचार्य जी, स्वामी वेदानन्द जी वेद बागीश पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती त्रिवेदतीर्थ, आचार्य ज्योति स्वरूप जी एटा आचार्य पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक, स्वामी व्रतानन्द जी चित्तौड़ गढ़, आदि-आदि इस परम्परा में नीव के पत्थर बने और संविधान तैयार किया उसी काल में आपके दर्शनों का प्रथम बार सौभाग्य प्राप्त हुआ था तथा उनकी सेवा करके आशीर्वाद भी प्राप्त किया था। धीरे-धीरे आयु और ज्ञान के साथ परिचय में वृद्धि होती गई जो बाद में सच्चे अर्थो में गुरू शिष्य के रूप में आजीवन सौभाग्य संवर्द्धन करती रही। विधावारिधि (पी. एच.डी.) के समय जो आशीर्वाद प्राप्त किया वे जीवन के गौरवशाली क्षण थे।

आपका जन्म सन् १९०६ में राजस्थान प्रान्त के अजमेर जिले में बिडका व्यावास नामक ग्राम में हुआ था। आप बचपन से ही पढ़ने में कुशाग्र बुद्धि थे आपने देवनागरी गणित छोटी सी ही आयु में पढ़ लिये थे आपके पिता आपको पूर्ण वैदिक विद्वान बनाना चाहते थे अतः आपको गुरूकुल कांगड़ी में पढ़ाने का पूर्ण निश्चय कर लिया और १९२१ में अजमेर से हरिद्वार गुरूकुल कांगड़ी के लिए चल पड़े रास्ते में तरह तरह के सुन्दर भावी स्वपनों में योजना बनाते बनाते हरिद्वार स्टेशन पर आ गये वहां से गुरूकुल का मार्ग पूछकर कांगड़ी नामक ग्राम की ओर चल दिये वहां जाकर पता चला प्रवेश तिथि निकल चुकी है जो आवश्यक प्रवेश इस सत्र में लेने थे वे स्थान पूर्ण हो चुके हैं। इस वर्ष नवीन प्रवेश अब कोई नहीं हो सकेगा। अतः निराश होकर बालक को अउनके पिता श्री फिर अलीगढ़ में स्वामी सर्वदानन्द जी द्वारा स्थापित साधु आश्रम की ओर लेकर चले पड़े और वहीं पर प्रवेश करा दिया।

ऐसा विद्वान जिसे व्याकरण का विशेष अधिकार था, जो किसी विद्यालय अथवा विश्व विद्यालय में नहीं पढ़े उन्होंने कोई परीक्षा आधुनिक परीक्षाओं की तरह नहीं दी अपितु जैसे कुटिया में गुरू विरजानन्द जी से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ज्ञान प्राप्त किया उसी प्रकार पदवाक्य प्रमाण यज्ञ पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी के चरणों में साधु आश्रम हरदुआगंज-अलीगढ़ में बैठकर वेद वेदांगों का पूर्ण अध्ययन किया। १९२१ई. में गुरूकुल कांगड़ी में आपके पिता जी श्री पं. गौरीलाल आचार्य जी पढ़ाना चाहते थे लेकिन वहां प्रवेश तिथि सत्रावसान होने से नहीं पढ़ा सके। स्वामी श्रद्धानन्द जी के लिए कोई सिफारिश विवशता में काम नहीं आई। गुरूकुल कांगड़ी के भाग्य में यह यश नहीं था जो पं. युधिष्ठिर जी के पढ़ने पर मिलता उस यश को साधु आश्रम ने प्राप्त कर लिया। साधु आश्रम में गुरू श्रृंखला में आ. शंकर देव जी श्री पं. बुद्धदेव जी उपाध्याय जैसे विद्वानों के अन्तेवासी होकर विद्वान बने

क्रमशः पृष्ठ.....४ पर

महर्षि दयानन्द एवं समाज सुधार

डॉ० सत्यकाम आर्य जी
साहित्य मंत्री

जंजीरों से जकड़े स्वदेश को राह दिखाई थी तूने,

जिसको भी काल न बुझा सका वह शमा जलाई थी तूने,

घनघोर तिमिर के आंगन में तू बीज उषा के बोला था,

तूने आवाज लगाई भी जब सारा भारत सोता था।।

'अन्य देशों में राज्य करने की कथा ही क्या कहनी, आर्यावर्त में भी आर्यो का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्मम राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों द्वारा पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र है। दुर्दिन जब आता है, तब देश वासियों को अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते है। कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं।'' साक्षात्कृतधर्मा, महानयोगी, आदित्य ब्रह्मचारी, परमवेदज्ञ, अद्वितीय वैश्यकरण, तर्कशिरोमणि, अविपरम्परा पोषक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यह अन्तरवेदना अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सन् १८६४ में व्यक्त किया था। यह पीड़ा भारत की उन्नीसवीं शताब्दी की दशा का हृदय विदारक चित्र प्रस्तुत करती है। तत्कालीन भारतीयों के नैतिक एवं सामाजिक जीवन में सर्वत्र अस्थिरता, अराजकता एवं अशान्ति का पूर्णतः प्रभाव था। पराधीन देश जन्मना जातिवाद छुआछूतवाद, मूर्तिवाद, अवतारवाद, अन्धविश्वास, सामाजिक रूढ़ितावाद (मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, भूतप्रेतवाद आदि) से पूरी तरह ग्रस्त था। ऐसी विषम परिस्थिति में तत्कालीन देशवासियों के मन में स्वतन्त्रता बन्धुत्व एवं एकत्व जैसे उदात्तभावों के आने का प्रश्न ही नही था। सम्पूर्ण भारत में शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेज मिशनरियों का बोलबाला था। राजाराम मोहन राय जैसे सुधारक भी तब वाराणसी में स्थापित संस्कृत विद्यालय के प्रशंसक नहीं थे क्योंकि वह अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों-कॉलेजों के पक्षधर थे।

बहुतेरे प्रबुद्धजन अँग्रेजियत को भारत की प्रगति का प्रतीक मानते थे। लार्ड मैकाले ने ऐसे ही वातावरण को देख अपने पिता को आत्मविश्वास से भरपूर पत्र लिखा था- ''मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि शिक्षा सम्बन्धी योजना सफल हो गई तो बंगाल में ३० वर्षो बाद कुलीन एवं सम्पन्न श्रेणियों में एक भी मूर्तिपूजक (हिन्दू) नहीं बचेगा। ईसाइयत के प्रचार के लिये कोई अन्य प्रयत्न किये बिना यह काम सहज ही सम्पन्न हो जायेगा। यह सत्य है कि उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में इस भविष्यवाणी के मिथ्या सिद्ध होने की बहुत कम सम्भावना थी। इसी कालखण्ड में महर्षिदयानन्द ने भारतीयों की इस मनोदशा का परिचय प्राप्त किया साथ ही इस दुर्भाग्य एवं मिथ्या प्रवाह को अपनी अदम्भ्य जीवनी शक्ति, आत्मतप और प्रखर समाज सुधारक भावना के द्वारा मोड़ने एवं रोकने का यत्न प्रारम्भ किया।

संक्षिप्त जीवन परिचय -

''आग को ऐसा सहेजा, क्रान्ति फूँकी थी निराली,

वेद की जलती ऋचा से जिन्दगी ऐसी सजाली,

साधना आलोक की अभिव्यक्तियों में लय हुई क्यों?

तुम जले तो मोर आया, तुम बुझे तो थी दिवाली।।

कवि की इन पंक्तियों का भाव एक होनेहार बालक के जीवन पर अक्षरशः सही अवतरित है जिसका शुभ जन्म १२ फरवरी, १८२४ को सौराष्ट्र प्रान्तस्थ मौरवी राज्यान्तर्गत ग्राम टंकारा निवासी औदीच्य कुलीन शिवोवासक जन्मना ब्राह्मण दम्पत्ति श्री कर्षण जी तिवारी एवं श्रीमती यशोदा बाई के घर आंगन में हुई। तेजस्वी एवं सुसंस्कारित बालक मूलशंकर ५ वष्र की अवस्था में वर्ण शिक्षा प्राप्त कर ८ वर्ष की आयु में यज्ञोपवीतो हो गया। उपनयन संस्कार का प्रभाव ही कहें कि उसने १४ वर्ष एकी सुकुमार वस्था ही में व्याकरण, यजुर्वेद तथा अन्य वेदों के कुछ अंशों को कण्ठस्थ कर लिया था। मूलशंकर को संवत् १८९५ में शिवरात्रि के दिन शिव मूर्ति पर चढ़े नैवद्य को चूहों द्वारा खाते देख सच्चे शिव दर्शन की लालसा जगी। कालान्तर में छोटी बहन एवं धर्मात्मा चाचा के असामयिक मृत्यु पर हृदय में मृत्युज्जंयी बनने की वैराग्य वृत्ति उदय हुई। संवत् १९१७ में मथुरा में जगदगुरू स्वामी विरजानन्द के पावन एवं आध्यात्मिक संरक्षण में व्याकरण, पंतजलि योग सूत्र और वेद वेदांगों की शिक्षा ग्रहण की। तदनन्तर गुरू आज्ञानुसार वहीं से कृष्णन्तो विश्वमर्याम का व्रत लिया। इस व्रत के पूर्ण करने हेतु आपने संवत् १९३२ में बम्बई स्थित गिरगाँव में आर्य समाज की स्थापना की। किसी कवि ने अनेक व्रत को अपनी पंक्तियों में कहा कि -

''जिन्दगी को तपाये दे रहा हूँ,

स्वर्ण को कुन्दन बनाये दे रहा हूँ,

आँधियों को रोशनी मिलती रहेगी

आज वह दीपक जलाये दे रहा हूँ।।

समाज सुधार - महर्षि व्यास के शब्दों में धर्म का मर्म यह है कि जो व्यवहार हमें अपने लिये स्वीकार नहीं, वह दूसरों के साथ न करें। परिवार की परस्पर कलह ने महाभारत जैसे विश्वयुद्ध का स्वरूप जब धारण किया तो असंख्य जीवन ही नष्ट-भ्रष्ट नहीं हुए वरन उच्च आदर्श, मानवीय सिद्धान्त, जीवन मूल्य और धार्मिक मर्यादायें भी इस विकराल युद्ध की भेंट चढ़ गये। सत्य सनातन वैदिक धर्म के विनाश हो जाने के कारण विभिन्न प्रकार के मत-पंथ विश्व के विभिन्न क्षेत्रें में उदय हो गये। यथा बौद्ध , जैन, यहूदी, पारसी, इसाई और इस्लाम आदि। यद्यपि इन सभी मानवकृत, समसामयिक एवं वर्ग विशेष का हेतु चाहने वाले पंथों में वेदव्यास की धर्म-भावना का भाव '' कभी भूलकर किसी से न करो ऐसा सलूक। कि जो तुमसे कोई करता, तुम्हें नागवार होता।। यत्र-तत्र प्रतिध्वनित होता है किन्तु गहराई में जाने पर सत्यसनातन वैदिक धर्म में पाई जाने वाली भावना इनमें सर्वत्र नहीं मिलती है।

यहाँ एक तथ्य उल्लेखनीय है कि सभी नवोदित मतों-सम्प्रदायों ने

क्रमशः पृष्ठ.....६पर

आर्य समाजों को अनिवार्य सूचना

आर्य समाजों के समस्त प्रधान मन्त्री एवं जिला सभाओं के अधिकारी अपनी समाज एवं अपनी जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के आवश्यक विवरण को कम्प्यूटर से तैयार कराकर कार्यालय को भेजने का कष्ट करें। आर्य समाज स्थापना तिथि सभा से सम्बद्धता तिथि - बैंक खाता संख्या-प्रधान-मन्त्री कोषा नाम-पता एवं मो० नम्बर भूमि विवरण सम्पत्ति विवरण की फोटों कॉपी- भवन का फोटो यज्ञशाला का फोटो मुख्यद्वार का फोटो तथा विद्यालय विवरण को भी इसी प्रकार भूमि भवन के पूर्ण विवरण सहित जौ० २०१७ तक सभा कार्यालय में भेजने की व्यवस्था करें। आशा है जिला सभा के प्रधान एवं जिला अन्तरंग सदस्य संचालक आर्य वीरदल/अधिष्ठता इसमें रूचि लेकर सभा का सहयोग करेंगे डाक अथवा ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

धर्मेश्वरनन्द सरस्वती
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधिसभा उ०प्र०
५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ, उ०प्र०
मो.९८३७४०२१९२

आर्य गुरूकुल पौन्धा-देहरादून में सम्मेलन सम्पन्न

२ जून से ४ जून २०१७ तक वेदपारायण यज्ञ एवं सम्मेलन सम्पन्न हुआ संस्था के संस्थापक पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती का पूरे समय आशीर्वाद रहा। डा० धनज्जय आचार्य के संयोजक में कार्यक्रम में अत्यन्त प्रभावशाली रहा स्वाध्यायशिविर का आयोजन वैदिक विद्वान डा० सोमदेव शास्त्री मुम्बई की अध्यक्षता में ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पर रहा तथा विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन किया गया २ जून को वेदवेदांग सम्मेलन एवं गोरक्षा सम्मेलन हुआ ३ जून को आर्य परिवार सम्मेलन सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ विद्यावत सम्मेलन स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता एवं उ०ख०वि०वि० के कुलपति प्रो० पीयूषकान्त दीक्षित मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। रात्रि में कवि सम्मेलन कविमनीषी सारस्वत मोहन मनीषी जी की अध्यक्षता एवं संयोजन में हुआ ४ जून को समापन एवं गुरूकुल सम्मेलन प्रभावशाली रहा व्यायाम प्रदर्शन के साथ ही सम्मेलन का समापन हुआ वैदिक विद्वान डॉ० ज्वलन कुमार शास्त्री डा० रघुवीर सिंह शास्त्री, आचार्य वेद प्रकाश जी क्षेत्रिय पूज्य स्वामी चित्तेश्वरनन्दजी आचार्य बालकृष्ण जी, ठा० विक्रम सिंह जी, डा० सूर्यादेवी चतुर्वेदा, ओमप्रकाश वर्मा, श्री सत्यपाल जी पथिक सभामन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती आदि-आदि के उपदेश हुए संयोजक डॉ० रवीन्द्र कुमार आचार्य एवं अजीत आचार्य ने किया। योग्य छात्रों एवं विद्वानों को भी सम्मानित किया गया। हरयाणा - दिल्ली- पंजाब तथा उ०प्र० खण्ड से हजारों की संख्या में आर्यो ने पहुंचकर शोभा बढ़ाई ५ जून से २० जून तक स्वामी देवव्रत जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्यवीरदल का शिविर सार्वदेशिक स्तर का सम्पन्न हुआ।

-रामकुमार शास्त्री

शोक श्रद्धांजली

- २५/५/२०१७ को श्री सुरेन्द्र सिंह आर्य का देहावसान हो गया। संजय कुमार आर्य मन्त्री आर्य समाज पांचली मेरठ के आप पिता जी थे। शान्ति यज्ञ २ जून को श्री हरवीर सिंह सुमन ने सम्पन्न कराया बाद में सभा का आयोजन हुआ उसमें सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती गुरूकुल पूठ का उपदेश हुआ श्री गजराज सिंह प्रेमी तथा अन्य क्षेत्रीय नेताओं ने भी श्रद्धाजंलि दी उपस्थित आर्यो में मुख्यरूप से रामपाल सिंह एडवोकेट श्री कर्नल ढाका श्री मेगराम जी प्रधान, महेन्द्र सिंह आर्य, राजाराम, सतवीर सिंह पूरनचन्द्र भीम सिंह धर्मेन्द्र सिंह राकेश कुमार ब्रजपाल आर्य आदि- आदि ने सान्त्वना प्रदान की।

- आर्य समाज बिगास - बाबूगढ़ के सदस्य श्री सत्यपाल सिंह आर्य की धर्मपत्नी विद्यावती जी का निधन हो गया उनका शान्ति यज्ञ २० मई को स्वामी अखिलानन्द जी गुरूकुलपूठ ने सम्पन्न कराया चौ० शीशपाल सिंह चौ० रामवीर सिंह, जितेन्द्र सिंह आर्य खैय्या, अनुज कुमार आर्य, रामपाल सिंह जितेन्द्र आर्य बबलू सिंह आर्य आदि-२ ने भी श्रद्धाजंलि प्रदान की।

- आर्य समाज बैराफिरोजपुर स्याना बु०शहर के मन्त्री अरविन्द आर्य की माता जी का देहान्त हो गया १४ जून को शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ संजीव आर्य शिवकुमार सरस्वती स्याना, नरेन्द्र आर्य स्याना आदि-२ ने शोक संवेदना व्यक्की/आर्यमित्र परिवार की शोकाकार संवेदना।

- आर्य समाज राहवती मवाना मेरठ के प्रधान प्रि० धर्मपाल सिंह के पुत्र धनराजसिंह की धर्मपत्नी अर्चना आर्या का देहान्त अचानक हो गया उनका शान्तियज्ञ १४ जून को वेदपाल शास्त्री मवाना एवं स्वामी अखिलानन्द जी गुरूकुलपूठ ने सम्पन्न कराया। क्षेत्र एवं दूर-दूर से प्रधानाचार्य - शिक्षक एवं आर्य समाज के कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे। सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने भी शोक संवेदना व्यक्त की है।

- आर्य समाज सालारपुर - दतियाना जिला हापुड़ के सदस्य एवं गुरूकुलपूठ में अंग्रेजी के शिक्षक श्री मा० करतार सिंह आर्य का देहान्त पुत्री के पास नंगलाखेपड़ मु०नगर में हो गया उनका संस्कार ग्राम में ही हुआ तथा शान्ति यज्ञ स्वामी अखिलानन्द जी गुरूकुलपूठ एवं पं० नानकचन्द्र आर्य कुंवरपाल सिंह शास्त्री जी द्वारा सम्पन्न हुआ क्षेत्र के आर्यो ने पहुंचकर संवेदना व्यक्त की के०पी० आर्य, उत्तम शास्त्री, डा० जयवीर सिंह, जितेन्द्र आर्य आदि-आदि तथा गुरूकुलपूठ के समस्त आचार्य समूह एवं सभामन्त्री स्वामी धर्मेश्वरनन्द सरस्वती ने भी शोक संवेदना व्यक्त की है।

-दिनेश आचार्य
गुरूकुलपूठ - हापुड़

पृष्ठ....३ का शेष.....**वेद वेदांगों के प्रमाण पुरुष.....**

सोने पर सुगन्धि प्राप्त करने के लिए काशी (वाराणसी) चले गये वहां महा महोपाध्याय पं. चिन्न स्वामी शास्त्री, पं. पट्टाभिराम शात्री से मीमांसा दर्शन का विशद् अध्ययन करके मीमांसक कहलाये तथा पं. देव नारायण तिवारी व्याकरण का गूढ़ अध्ययन किया। २६ वर्षो की घोर तपस्या में आप कुन्दर बन कर आर्य समाज के गौरव कहलाये पूज्य जिज्ञासु जी के अन्तेवासी स्थाई रूप से हो गये।

देश विभाजन १९४७ के पश्चात् लम्बे समय तक काशी दिल्ली अजमेर तथा सोनीपत जैसे स्थानों पर रहकर भावी पीढ़ी के निर्माण का संकल्प ले लिया जिसमें विद्वानों की बड़ी श्रृंखला है। आचार्य विजय पाल जी विद्यावारिधि, डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री रायबरेली, डॉ. ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री अमेठी, आचार्य सुद्युम्न शास्त्री जी काशी बहिन प्रज्ञादेवी जी, बहिन मेधादेवी जी वाराणसी, स्वामी वेदानन्द जी उत्तरकाशी आचार्य धर्मवीर जी बदायूँ, आचार्य सोमदेव जी मुम्बई, आर्यजगत् के सैकड़ों दैदीप्यमान नक्षत्र के रूप में विद्या का प्रकाश कर रहे हैं।

आचार्य सोमदेव जी जैसे विद्वान् अपने अपने क्षेत्र में वेद प्रचार एवं पठन-पाठन का कार्य यथा सामर्थ्य कर रहे हैं। सभी अपने आप में संस्था हैं आपके नाम को जीवित रखने के लिए आचार्य सोमदेव जी ने आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई के माध्यम से ''पं. युधिष्ठिर मीमांसक'' वैदिक विद्वान् पुरस्कार स्थापित किया हुआ है प्रति वर्ष आर्ष परम्परा के व्याकरण के विद्वान् आचार्य को यह पुरस्कार ससम्मान दिया जाता है। अबतक लगभग २५ आचार्यो को यह पुरस्कार सम्मान मिल चुका है। जिनमें लेखक को भी २००४ में प्राप्त हुआ था। ऐसी श्रृंखला पूरे देश में कार्य कर रही है तथा पूज्य गुरूदेव जी को जीवित रख रही है आपके चरणों में बैठकर सैकड़ों शिष्यों ने (पी.एच.डी.) की उपाधि प्राप्त की व्याकरण साहित्य का इतिहास कई भागों में प्रकाशित है। ''रामलाल कपूर ट्रस्ट'' के माध्यम से लेखन सम्पादन तथा शास्त्र प्रकाशन का कार्य एक लम्बे समय से चल रहा है। अष्टाध्यायी से लेकर महाभाष्य पर्यन्त व्याख्या ग्रन्थों का प्रकाशन, वेदभाष्यों का प्रकाशन साथ ही शास्त्र तथा शोध ग्रन्थों का प्रकाशन हो रहा है। ''वेदवाणी'' मासिक पत्रिका लम्बे समय से चल रही है। वेद विषयक ग्रन्थों का लेखन एवं सम्पादन तथा प्रकाशन आपके निर्देशन में चलता रहा। बाद में इनके योग्यचतम शिष्य आचार्य विजय पाल जी ने आजीवन निभाया। वर्तमान में आचार्य प्रदीप कुमार जी इस कार्य को पूर्ण निष्ठा एवं लग्न से चला रहे हैं। आप भी होनहार समर्पित युवा विद्वान् है। पाणिनी विद्यालय रेवली ग्राम में चल रहा है जो सोनीपत जिले में है। यह हरयाणा एवं पूरे देश के लिए गौरव की बात है। आचार्य जी के साहित्य की सूची लम्बी है-वेद-वेदांगों को आम जनता एवं युवा पीढ़ी के लिए पहुंचाने के कार्य का श्रेय पूज्य मीमांसक जी को जाता है।

मीमांसक जी का सम्मान-

आप सम्मान से नहीं अपितु सम्मान आपसे मिलकर शोभायमान हुआ है। भारत के राष्ट्रपति महोदय द्वारा ''संस्कृत विद्वान्'' का सम्मान देकर सम्मानित किया। वाराणसी के सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी ने आपको महामहोपाध्याय की उपाधि से सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ ने आपको संस्कृतविद्वत्ता ''सर्वोच्च पुरस्कार'' प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त भारत के अनेक संस्थान-सामाजिक संस्थायें तथा आर्य समाजों ने आपको समय-समय पर सम्मानित किया। सम्मेलनों में आप वेद सम्मेलनों की अध्यक्षता की। वेद विषयक ग्रन्थों में महर्षि दयानन्द के ऋग्वेद भाष्य मण्डल (१ से १०५) सूक्त पर्यन्त सम्पादन यजुर्वेद भाष्य संग्रह को पंजाब वि.वि. के पाठ्यक्रम में निर्धारित कराया। यजुर्वेद ग्रन्थों के प्रकाशन से यदि तुलना करें तो पृथक् से एक ग्रन्थ तैयार हो सकता है।

एक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व से समाज सेवा, संस्कृति सेवा तथा भावी पीढ़ी को अपनी ऊहा से कितना उपकृत कर सकता है यह आप पूज्य मीमांसक जी के जीवन से परिचित हो सकते हैं। हम सभी आर्यो के लिए एक संदेश भी है और भावी पीढ़ी के लिए एक शुभ चिन्तन भी है। पूरे संसार को आर्य बनाने का स्वप्न देखना सरल है उसे पूरा करना कठिन परीक्षा है जो आचार्य मीमांसक जी जैसा सच्चा तपस्वी इस शिव संकल्प को पूरा कर सकता है। आओ हम भी उनके अधूरे कार्य को पूरा करने का व्रत लेवें। मैं पूज्य गुरूवर के प्रति आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. एवं गुरूकुल पूठ परिवार की ओर से हार्दिक सम्मान प्रकट करता हूँ।

संचालक - गुरूकुलपूठ
गढ़ मुक्तेश्वर, हापुड़ (उ०प्र०)
मो.९८३७४०२१९२

पृष्ठ....१ का शेष.....**वैदिक उर्वशी पुरूरवा एवं.....**

समुच्चय के ४/१४ में भी कहा गया है कि अन्तरिक्ष में व्यापक होने से उर्वशी विद्युत का ही नाम है- ' उर्वशी विद्युत्। उरू विस्तीर्णमन्तरिक्षमश्नुते इति'। अमरकोष में भी उर्वशी को मेघस्थ विद्युत् ही कहा गया है।

पूर्व उद्धृत ऋग्वेद १०/६५/१०, जो निरुक्त ११/३६ में भी उद्धत है, पर भाष्य करते हुए दुर्ग ने लिखा है कि विद्युत के समान अथवा विद्युत रूप उर्वशी अन्तरिक्ष में मेघों के मध्य जाती हुई पुनः चमकती है और जलों को मेघों से गिराती हुई लोगों को दीर्घायु प्रदान करती है- ' विद्युन्न विद्युदिव संप्रत्यर्थे वा नकाराः। या पतन्ती गच्छन्त्यनरिक्षे मेघोदरेषु दविद्योत् पुनः पुनः द्योतते भरन्ती हरन्ती में मम स्वभूतानि आप्यानि काम्यानि उदकानि यो उर्वशी सा यदैवमुदकानि हरन्ती मेघेम्यः पतन्ती भृशं स्वयं विद्योतते ..... प्रोर्वशी प्रवर्द्धयते दीर्घमायुः।

इसमें उर्वशी को जो दीर्घायु प्रदान करने वाली कहा गया है, उसका निम्नलिखित वैज्ञानिक कारण है - 'Ozon (Oroygen in condensedn or concentrated state) is also a powerful germicide, cepable of killing the germs which give rise to contrageous disease. During a thunderstorm ozon is produced in large quantity by the electric discharge and thus the air recieves as were a new lease of life and we feel the refrehing effects when the storn is over. (Electricity by W.H. Cormicks, P-23)'

अर्थात् ' ओजोन, जो आक्सीजन का सान्द्र रूप है, भी एक शक्तिशाली जीवाणुनाशक है और उस जीवाणु का भी नाश करने भी सक्षम जो संक्रामक बीमारी पैदा करते हैं। बिजली की कड़क में विद्युत-संचार के कारण ओजोन काफी मात्रा में पैदा होता है, जिससे वायु को मानो नवजीवन मिलता है और बिजली कड़कने के बाद हम नई स्फूर्ति अनुभव करते हैं। यही नहीं, पृथिवी के ऊपर एक ओजोन परत है, जिसे पृथिवी का रक्षा कवच कहा जाता है, जिसके न रहने पर पृथिवी पर प्राणियों का जीवन असम्भव हो जाएगा। इसलिए भी उर्वशी को दीर्घायु दातृ नाम सार्थक है। चूंकि विज्ञान से सिद्ध बात है कि ओजोन की उत्पत्ति विद्युत से होती है, अतः जीवन रक्षक ओजोन को उत्पन्न करने वाली उर्वशी कोई अन्य पदार्थ नहीं, बल्कि विद्युत ही हो सकती है।

ऋग्वेद के इस मंत्र १०/६५/१० पर भाष्यकार स्कन्द का कथन है कि विद्युत के समान या विद्युत रूप स्तनयित्नु लक्षणा वाणी का अधिदेवता उर्वशी है - ' विद्युदिव या उर्वशी स्तनयित्नुलक्षणया वाचो अधिदेवता'। इन सभी प्रमाणों से उर्वशी आकाशीय विद्युत सिद्ध होती है।

पुरुरवा

अब हम देखते हैं कि पुरुरवा क्या है ?उणादि सूत्र ४/२३२ के आधार पर पुरु+रू धातु से पुरुरवा शब्द बनता है, जिसका अर्थ होता है बहुत शब्द करने वाला। आचार्य वरूरूचि ने अपने निरुक्त समुच्चय के ४/१४ तथा यास्क ने अपने निरुक्त १०/४६ में भी यही भावार्थ प्रकट किया है। निरुक्त १०/११ पर मध्यस्थानी यानी अन्तरिक्षस्थ देवताओं का तथा निरुक्त १२/१ पर द्युस्थानी देवताओं का वर्णन मिलता है। इसी क्रम में निरुक्त १०/४६ में पुरुरवाका वर्णन है। इस वर्णन से पुरुरवा कोई अन्तरिक्षस्थ पदार्थ विशेष प्रतीत होता है, कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं। निरुक्त १०/४६ के अपने भाष्य में स्कन्द स्वामी ने लिखा है- 'पुरुरवा मध्यस्थानः .....। सः कस्मात् ? बहुधा रोरुयते। अनेक विद्यमत्यर्थ एत्नयित्नु लक्षणं शब्दं करोति इति पुरुरवा अर्थात् पुरुरवा अन्तरिक्षस्थ पदार्थ है। वह किसलिए ?बहुत प्रकार के शब्द करने के कारण तथा अनेक गर्जनादि लक्षण के कारण वह पुरुरवा है। हम जानते हैं कि अन्तरिक्षस्य पदार्थो में शब्द एवं गर्जन आदि लक्षण मेघ में ही घटित होता है। अतः पुरुरवा को मेघ मान लेने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। वस्तुतः पुरुरवा मेघ ही है। यह बात यजुर्वेद एवं शतपथ ब्राह्मण से भी सिद्ध होती है, क्योंकि यजु० (२६/१०) में कनिक्रदद्देवः पर्जन्यः एवं शतपथ ६/७/३/२ में ' क्रन्दतीव पर्जन्यः है, जिसका अर्थ है कि मेघ गर्जन करने वाला है। इस तरह पुरुरवा मेघ सिद्ध होता है।

इस प्रकार तर्क एवं प्रमाणों से यह बात सिद्ध होती है कि उर्वशी आकाशीय विद्युत एवं पुरुरवा मेघ है, कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं।

उर्वशी एवं मित्रावरूण :

अब हम उर्वशी एवं मित्रावरूण के सम्बन्ध विषय पर विचार करते हैं। कहा जाता है कि उर्वशी के साथ मित्रावरूण के संयोग से वशिष्ठ की उत्पत्ति हुई। इससे सम्बद्ध एक मंत्र इस प्रकार है -

उतासि मैत्रावरूणो वशिष्ठोर्वश्याः ब्रह्मन्मनसोऽधिजातः।
द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन विश्वेदेवाः पुष्करे त्वाऽददन्त।। ऋ. ७/३३/११

अथार्त् हे ब्रह्मन् वशिष्ठ ! तू मित्र एवं वरूण का पुत्र हो और उर्वशी के मन से उत्पन्न हुए हो। अन्तरिक्ष में प्राप्त तुझ गतिशील को विश्वेदेवा दिव्य ज्ञान के द्वारा देवें अर्थात् ज्ञानपूर्वक उपयोग के लिए देवें।

पहले यह सिद्ध किया जा चुका है कि उर्वशी आकाशीय विद्युत है कोई नारी विशेष नहीं। इससे एक बात तो स्पष्ट है कि उर्वशी जब आकाशीय विद्युत है, तो उसके साथ सम्बन्ध स्थापित करने वाला और उससे उत्पन्न होने वाला भी कोई कोई व्यक्ति या प्राणी विशेष नहीं हो सकता, क्योंकि विद्युत के साथ किसी प्राणी का सम्बन्ध स्थापित करके संतान उत्पन्न करना सम्भव नहीं है। तो फिर मित्र, वरूण एवं वशिष्ठ हैं क्या चीज?आगे इस प्रश्न का सप्रमाण उत्तर खोजते हैं।

इस मंत्र पर निरुक्तकार यास्क ने निरूक्त में लिखा है कि 'उर्वशी को देखकर मित्र एवं वरूण का रेतः पात हो गया'- 'तस्याः (उर्वश्याः) दर्शनात् मित्रावरूणयोः रेतश्चस्कन्द' (निरुक्त ५/१३)। लेकिन निघण्टु में रेतः शब्द का अर्थ जल भी किया गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि उर्वशी (विद्युत) को देखकर मित्रावरूण से जल-पात हुआ। जब उर्वशी पूर्व में अनेकशः प्रमाण से विद्युत सिद्ध हो चुकी है और यहाँ निघण्टु के आधार पर रेतः जल का भी वाचक है, तो मित्र-वरूण भी कोई ऐसे ही पदार्थ होने चाहिए, जिसमें विद्युत-संचार होने पर जल की उत्पत्ति होती है। इससे किसी वैज्ञानिक घटना का संकेत मिलता है। जब हम शतपथ ब्राह्मण पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि उसमें अनेक स्थानों पर मित्र एवं वरूण को दो वायु विशेष के रूप में चिहिन्त किया गया है, जिसे क्रमशः प्राणवायु एवं उदानवायु कहते हैं- (क) प्राणोदानौ वै मित्रवरूणौ' (शत० १/८/३/१२) एवं (ख) ' प्राणोदानौ मित्रावरूणौ' (शत० ३/२/२/१३)।

अब हम आधुनिक विज्ञान पर दृष्टि डालते हैं। विज्ञान से आज सिद्ध है कि आक्सीजन एवं हाइड्रोजन नामक दो गैसों में विद्युत संचार कराने पर जल का निर्माण होता है। इस वैज्ञानिक सत्य के साथ जब हम उपरोक्त उर्वशी तथा मित्र वरूण की तुलना करते हैं तो पाते हैं कि उर्वशी विद्युत का स्थान लेती है और मित्र-वरूण क्रमशः ऑक्सीजन एवं हाइड्रोजन के स्थान पर आते हैं। उर्वशी पहले ही विद्युत सिद्ध हो चुकी है और शतपथ ब्राह्मण से मित्र-वरूण क्रमशः प्राणवायु एवं उदानवायु सिद्ध होते हैं। प्राण वायु ऑक्सीजन है और विज्ञान एवं वैदिक साहित्य से प्राप्त गुण-साम्य के कारण उदान वायु हाइड्रोजन सिद्ध होता है, क्योंकि विज्ञान भी हाइड्रोजन को ऊपर उठने वाली हल्की गैस कहता है और योग-दर्शन के व्यास-भाष्य में भी उदानवायु को ऊपर उठने वाला कहा गया है - 'उन्नयनात् उदानः' (व्यास भाष्य-३/३६)। तब वशिष्ठ वृद्धि जल ही होगा, क्योंकि पहले ही कहा जा चुका है कि 'नित्य पक्षे तु उर्वशी विद्युत वशिष्ठोऽप्याच्छादित उदक संघातः' (निरुक्त-५/१४)।

इस प्रकार उर्वशी एवं मित्रावरूण का यह पूरा प्रकरण ही प्राणवायु (ऑक्सीजन) एवं उदानवायु (हाइड्रोजन) के साथ उर्वशी (आकाशीय विद्युत) के संचार से वशिष्ठ यानी वृष्टि जल की उत्पत्ति का अलंकारिक किन्तु वैज्ञानिक वर्णन है। ध्यातव्य है कि वैदिक साहित्य में अपत्य (संतान) वाचक प्रत्यय जड़ पदार्थो में भी पाए जाते हैं। साथ ही यह भी ध्यातव्य है कि उर्वशी, पुरुरवा एवं मित्रावरूण तथा वशिष्ठ आदि शब्दों का प्रकरण भेद होने पर अन्य अर्थ भी सम्भव है, लेकिन इस प्रकरण में उपरोक्त अर्थ ही तर्क संगत है। मानवीय संवाद या कथानक प्रतीत होने वाले ऐसे अनेक स्थल वेदों में है, जिससे छिपे वैज्ञानिक सत्य को प्रकट करने के लिए विशेष अनुसंधान की आवश्यकता है।

स्वस्ति यज्ञ एवं वेद प्रचार

● आर्य समाज श्यामपुर जट्ट किठौर-हापुड़ में ७ जून को छत्रपति शिवाजी के राज्याभिषेक की स्मृति में स्वस्ति यज्ञ किया गया यज्ञ स्वामी अखिलानन्द सरस्वती गुरूकुल पूठ ने सम्पन्न कराया यज्ञ में मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री कमल सिंह मलिक रहे, डॉ. जयवीर सिंह प्रधान आर्य समाज एवं पूरे ग्राम समाज का भरपूर सहयोग रहा सभी ग्रामवासियों ने वेद प्रचार में स्वामी जी के उपदेश को श्रद्धा पूर्वक सुना और युवकों ने प्रेरणा लेकर यज्ञोपवीत धारण किये।

● आर्य समाज भगवानपुर बांगर-मेरठ के मंत्री मनोज कुमार आर्य ने ६ जून को अपने परिवार में स्वस्ति यज्ञ एवं वेद प्रचार का आयोजन किया। यज्ञ बह्मा स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. रहे स्वामी विजयानन्द जी आचार्य कृपाल सिंह शास्त्री ने यज्ञ की व्यवस्था की म. घनश्याम सिंह प्रेमी के भजनोंपदेश हुए। म. हरिश्चन्द्र आर्य एवं मा. हरीशपाल आर्य के भी भजन हुए म. ताराचन्द्र, शिवराम आर्य, दर्शनपाल आर्य, म. सोम मुनि प्रधान पदम सिंह आर्य, जिले सिंह आर्य, राजमुनि आदि-आदि ने यज्ञ में आहुतियां प्रदान कीं।

-कुलदीप शास्त्री
गुरूकुल पूठ, हापुड़

● १ जून, २०१७ को आर्य समाज खनपुर मेरठ के प्रधान गुरूकुल पूठ के उप प्रधान श्री शोदान सिंह आर्य ने अपने गृह पर स्वस्ति यज्ञ का आयोजन किया, यज्ञ श्री प्रदीप शास्त्री एवं राम कुमार शास्त्री ने सम्पन्न कराया। आर्य मंत्री जी संयोजक रहे सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी का प्रभावशाली उपदेश हुआ तथा श्री ओंकार सिंह आर्य ने धन्यवाद दिया शौदान सिंह आर्य अपने पुत्र बिट्टू आर्य के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष सत्संग एवं यज्ञ का आयोजन करते हैं। जयपाल सिंह, गुलवीर सिंह, ओमवीर सिंह सप्ति समस्त ग्राम के आर्यजनों ने आहुतियां प्रदान कीं।

अथर्ववेद परायण यज्ञ

आर्य समाज खजूरी किया परीक्षितगढ़ मेरठ म. दयानन्द धाम के प्रांगण में अथर्ववेद पारायण यज्ञ स्वामी देवेश्वरानन्द सरस्वती के संयोजन में सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. मंत्री-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ की शोभा बढ़ाते हुए उपदेश प्रदान किया। म. घनश्याम सिंह प्रेमी के भजन हुए। शिवम् आर्य, जयप्रकाश आर्य आशा राम आर्य, सोममुनि जी, राजमुनि जी आदि-आदि ने यज्ञ को गरिमा प्रदान की।

-प्रदीप शास्त्री, गुकुलपूठ

पृष्ठ....३ का शेष.....**महर्षि दयानन्द एवं समाज सुधार.....**

मानवीय मूल्यों को गौण और अपने को प्रमुख बताया फलतः तटकालीन भारतीय समाज दिग्भ्रमित होकर वेदोक्त धर्म से परे हो गया। ऐसी परिस्थिति में समाज आस्तिक नास्तिक, शैव-वैष्णव, सगुण-निर्गुण, शाकाहार-मांसाहार आदि खेमों में बंट गया। इन विषम परिस्थितियों के समाधान एवं धर्म और संस्कृति की सुरक्षा की दृष्टि से महर्षि स्वामी दयानन्द ने अंधविश्वासों, कुसंस्कारों, कुरीतियों एवं जड़ताओं पर प्रबल प्रहार किया साथ ही इनके पोषक संगठनों एवं सम्प्रदायों की कड़ी आलोचना भी की।

ऋषिवर दयानन्द ने आर्यसमाज के पहिले दो नियमों में परमात्मा के सच्चे स्वरूप का वर्णन किया अर्थात् प्रकाश डाला कि ईश्वर जगत् का आधार है। जगत् मिथ्या नहीं है बल्कि समस्त प्राणियों के लालन - पालन का ईश्वर विरचित मूल स्रोत है। स्वामी जी ने इन्हीं नियमों में स्पष्ट संकेत दिया कि ईश्वर सच्चिदानन्द है, प्राकृतिक नहीं है, निराकार है। ईश्वर अवतार नहीं लेता है। कोई जड़ पदार्थ ईश्वर के स्थानापन्न नहीं हो सकते। इसलिये सब प्रकार की प्रतिमायें जो ईश्वर के रूप में पूज्य हैं, वे कल्पित और भ्रमात्मक हैं। आध्यात्मिक सिद्धान्तानुसार अनुचित और हानिकारक हैं। यजुर्वेद में भी इसी विचार का समर्थन एवं निर्देश है-

''अन्धंतमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।

ततो भुयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्याथंरताः।।

न तस्य प्रतिमाऽस्ति

स्वामी जी ने दशवें नियम में स्पष्ट लिखा है कि हमें उन्हीं कार्यो के करने न करने की स्वतन्त्रता है जिसका प्रभाव केवल कर्ता तक सीमित रहे। प्रकारान्तर से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण समाज को प्रभावित करने वाले कार्यो में अपनी इच्छा को प्रधानता न देकर सामाजिक हित को ही सर्वोपरि समझना श्रेयस्कर है।

महर्षि दयानन्द की सोच में उत्कृष्ट मानव धर्म वह है जो मानव-मानव के बीच किसी प्रकार का भेदभाव न करते हुए सभी के लिये व्यक्तित्व विकास से लेकर जीवन में आगे बढ़ने के लिये समान अवसर प्रदान करने की पहिली विशेषता धारण करता हो। ऋषिवर की यह भावना ऋग्वेद के मन्त्र द्वारा पूर्णतः पुष्ट होती है- ''अज्येस्ठसो अकनिष्ठास एवं सं भ्रातरो वावृधः सौभगाय।

महर्षि दयानन्द स्वयं लिखते हैं- '' सव को तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिये जाएँ, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो चाहे दरिद्र की सन्तान हो। लौह पुरुष सरदार पटेल का कल्याणकारी वचन उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानन्द ने जिस अछूतोद्धार आन्दोलन को जन्म दिया उसी से प्रेरित एवं प्रभावित होकर श्रेद्धेय श्रद्धानन्द ने तिलक फण्ड में से कुछ धनराशि काँग्रेस के अछूतो द्वार कार्यक्रम में सम्मिलित करने का प्रस्ताव पारित कराया जिसे सम्मानपूर्व महामना मालवीय जी एवं महात्मा गांधी जी ने अंगीकार किया था।

चूँकि तत्कालीन भारतीय समाज में ब्राह्मणों एवं शूद्रों धरती में आकाश जैसा अन्तर था ऐसी स्थिति में सन्यासी दयानन्द ने अनुभव किया कि ऐसे जन्मना जातिगत, पंथगत भेदभाव के रहते राष्ट्रोन्नति सम्भव नहीं। इसके निवारण हेतु उन्होंने फिरोजपुर में सर्वप्रथम अनाथालय खोलकर असहाय, बेसहारा और जरूरतमन्द बच्चों के जीवन को सच्ची दिशा ही नहीं बल्कि उच्च चेतनामय जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। उन्होंने अथर्ववेद के इस मन्त्र की उच्चतम शिक्षा के भाव को जन-जन तक पहुँचाने संकल्प लिया-

प्रियं मा कृणु देवेषु, प्रियं राजसु मा कृणं। प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रे उतार्ये।। महर्षि दयानन्द

सत्यार्थ प्रकाश में स्वमन्तव्य लिखते हैं कि - ''चारों वर्ण परस्पर प्रीति, उपकार, सज्जनता, सुख-दुःख हानि-लाभ में एकमत्य रहकर राज्य और प्रजा की उन्नति में तन मन धन व्यय करते हैं। फलतः यजुर्वेद का सन्देश एवं उपदेश समाज में निश्चितरूपेण व्यवहृत होश अपरिवार्य है-

''ऊर्च नो धोहि ब्राह्मणेषु ऊचं राजसु नस्कृधि।

ऊचं विश्येषशु शूद्रेषु मयि धेहि रूचा ऊयम्।।

अर्थात ब्राह्मणों के साथ प्रीति हो, क्षत्रियों के साथ प्रीति हो, शूद्रों के साथ प्रीति हो मेरे हृदय में सबके प्रति प्रेम हो। स्वामी दयानन्द ने अनुभव किया था कि हिन्दु समाज एक ऐसा सरोवर बन चुका था जहाँ पानी बाहर तो निकलता था किन्तु एक बूंद अन्दर नही आ सकता था। ऋषिवर ने ऐसे सरोवर को शुल्क होने से बचा लिया अर्थात् लाखों मुस्लिम पाकिस्तान समर्थक होने से बच गये थे साथ ही स्वामी जीने ऐसे भाईयों को वैदिक धर्म में सादर आने तथा वेद विद्या पढ़ने-पढ़ाने का वेद सम्मत अधिकार प्रदान कर विश्व बन्धुत्व, सहअस्तित्व एवं एकत्व का कल्याणकारी सन्देश दिया।

युग प्रवर्तक दयानन्द समस्त पृथ्वी को एक परिवार की तरह मानकर परस्पर प्रेम पूर्वक रहने की वैदिक शिक्षा को हृदय से अनिवार्य मानते थे। अथर्ववेद के मंत्र जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नाना धर्माण पृथिवी यथोकसम्। अर्थात् बहुत भाषाओं को बोलने वाले, अनेक प्रकार के धर्मो (कर्मो) का पालन करने वाले लोगों को पृथ्वी माता अपने अन्दर ऐसे आश्रम देकर रखती है जैसे एक परिवार के लोग मिलजुलकर रहते है की उदान्त भावना को महर्षि जनजन तक पहुँचाने को अहर्निश दृढ़ संकल्प थे।

पृथ्वी की अप्रतिम संरचना मातृशक्ति उस काल में घोर अवमानना एवं उपेक्षा का जीवन यापन कर रही थी। शंकराचार्य ने स्त्री शूद्रौनाधीयातम् एवं गोस्वामी तुलसीदास ने ढोलगंवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी की घोषणा की थी। स्वामी दयानन्द ने अपने तप से सम्पूर्ण समाज को नारी शक्ति के वैदिक स्वरूप को ऋग्वेद के मंत्र से समझाया -

अहं केतु रहं मूर्धाह मुग्रा विवाचनी।

ममेध्नु क्रतुं पति सेहानाया उपाचरेत्।।

अर्थात् मैं श्वजा के तुल्य हूँ। मैं समाज में मूर्धा स्थान पर केन्द्रित हूँ। मैं तेजवन्ती एवं तपोवन्ती बनकर सभाओं में हितोपदेश करने वाली हूँ। मेरे आदर्शो, मेरी इच्छाओं, साधना एवं कर्म के अनुकूल मुझे प्रति प्राप्त हो। स्वामी जी ने अपने सत्योप देशों के माध्यम से नारियों में उत्तम शिक्षा, साहस, वीरता और बलिदान की भावना को जगाया। इसीलिये आज भी स्वामी दयानन्द प्रथम नारी उद्धारक के रूप में अभिनन्दनीय है। उनकी दृढ़ मान्यता थी कि नारी के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पुर्नजीवित करने के लिये उनके मध्य वैदिक शिक्षा का विकास आवश्यक हो। स्वामी जी अपने स्वप्नों के आर्यावर्त में भारी के लिये ऐसी शिक्षा चाहते थे जो नारी को गृहकार्यकुशलता के साथ-साथ सामाजिक जीवन स्थिरल, दृढ़ता एवं स्वावलम्बन प्रदान कर सके। यजुर्वेद में एतद्विषयक विचारों का प्रबल समर्थन दृष्टव्य है-

''द्यावासि घरूणास्तृता विश्वकर्मणा'' अर्थात हे नारी !

तू ध्रुव हो अटल निर्णयों वाली हो। ताकि तू

पूर्ण सुरक्षा एवं सम्मानपूर्वक जीवन जी सके।

संक्षेप में महर्षि दयानन्द समाज में एक ऐसे उदान्त विचार के समर्थक थे जो समानता, वैश्विक मातृ-भाव, सर्वागीण विकास एवं वैज्ञानिक आधार मूलक हो। राजर्षि रणजय सिंह महाराज द्वारा रचित छन्द महर्षि के जीवन पर प्रेरक प्रभाव डालता है।

''स्वामी दयानन्द ने दिखाया जो वेद पथ

उसी पर चलेंगे तो सच्ची शान्ति पायेंगे।

दीन, विधवा, अनाथ गोवंश संरक्षण में

तन-मन-धन सभी अपना लूटायेंगे।

भूलकर भारतीय सभ्यता प्राचीन कभी,

चीन और रूस केन व्यर्थ गीत गायेंगे,

दूरित को दूर कर वैदिक पताका लिये,

विश्व में रंणजय आर्य धर्म फैलायेंगे।।

●●●

स्वस्ति यज्ञ-

१४ जून, २०१७ को आर्य समाज सेहल के उप प्रधान श्री जोगेन्द्र सिंह पूर्व कमाण्डर सेना ने अपने गृह पर वेद प्रचार एवं स्वस्ति यज्ञ का आयोजन क्षेत्रीय यज्ञ समिति के संयोजन में कराया। पिता श्री कंचन सिंह के संस्कारों को सुरक्षित रखते हुए वेद प्रचार हुआ। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती का प्रभावशाली उपदेश १ घण्टा हुआ। आचार्य प्रमोद शास्त्री एवं हरि सिंह आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया संयोजन अमरपाल सिंह आर्य ने किया तथा म.यशपाल आर्य, दीपक आर्य, वन्दना आर्या, नेकपाल आचार्य भैसोडा, म. तेज सिंह आर्य भजनोपदेशक मंगत सिंह आर्य, विद्वानों के भजन एवं प्रवचन हुए। पूरे क्षेत्र के १५ ग्रामों के आर्यो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। माताओं की भी संख्या प्रशंसनीय रही। कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

प्रदीप शास्त्री
गुरुकुल पूठ, हापुड़

स्वामी रुद्रवेश का निधन

स्वामी रुद्रवेश का निधन ८६ वर्ष की आयु में पैतृक गांव रोड़ान में हो गया। आर्य समाज एवं क्षेत्र के लिए यह घटना असहनीय है। आर्य मित्र परिवार शोक संवेदना प्रकट करता है।

-सम्पादक

कैसा हो व्यवहार हमारा

-नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

वर्तमान काल के भौतिकतावादी युग में जब मनुष्य तथाकथित विकास की अंधी दौड़ की आपाधापी में बड़ी तीव्र गति आध्यात्म के शिखर से लुढ़कता अधोगति की तरफ फिसलता जा रहा है। ऐसे में कैसे दूसरे की टांग खींचकर आगे निकल पाउं इसी दौड़ में एक दूसरे के प्रति हमारा व्यवहार कैसा हो इसे पूरी तरह भूल चुका है। यदि स्पष्ट रूप से कहें तो आज के मनुष्य का आपसी व्यवहार भी व्यापार बन चुका है। यदि किसी को किसी से कुछ निजी स्वार्थ का काम है तो उसका व्यवहार एकदम चासनी की भांति मीठा हो जाता है। और यदि कोई काम नहीं है तो व्यवहार रूखा-सूखा कर्क। इसी स्वार्थ आधारित व्यवहार ने रिश्तों को भी स्वार्थी बना दिया है और मतलब की दुनिया में मतलब के रिश्ते रह गए है। बाप बड़ा ना भैया बस सबसे बड़ा रूपैया।

लेकिन प्रश्न उठता है कि हमारा व्यवहार दूसरों के प्रति कैसा हो हमें औरों से कैसा बर्ताव करना चाहिए। महर्षि देव दयानन्द ने आर्य समाज के सातवे नियम में इस बारे बहुत स्पष्ट निर्देश दिया है। ''हमें सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए'' अर्थात एक व्यक्ति के दूसरे से व्यवहार के लिए तीन अनिवार्य सावधानियां देव दयानन्द ने बताई प्रथम प्रीतिपूर्वक दूसरा धर्मानुसार तीसरा यथायोग्य। अब तीन अनिवार्य भार्तो को व्यवहारकुशल बनने के लिए विस्तार से समझना आवश्यक है। वेसे भी आज की दौड़ती भागती जिंदगी में हमने हर शब्द का अपने स्वार्थ के अनुरूप संकुचित रूढ़ि अर्थ करके अनर्थ कर दिया है। इसलिए प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तने का विस्तृत यौगिक अर्थ समझना आचरण में उतारने के लिए आवश्यक हो जाता है।

प्रीति वा प्रेम का सर्वाधिक दुरुपयोग वर्तमान काल में हो रहा है। प्रेम वा प्रीति के यौगिक अर्थ को संकुचित करते करते हमने इसे विपरीत लिंगों के वासनात्मक आकर्षण तक सीमित कर दिया है। जबकि प्रेम का तो बहुत विस्तृत अर्थ है गुरु-शिष्य, पिता-पुत्र, मां-बेटे, पिता-पुत्री, मां-बेटी, भाई-बहन जैसे प्रगाढ़ संबंधों में प्रेम या प्रीति इन रिश्तों के अटूट बंधन के लिए आवश्यक है। प्रेम की अनुपम परिभाषा अथर्ववेद के तीसरे काण्ड के ३०वें सूक्त के पहले मंत्र में दी है।

अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या।।

अर्थात एक मनुष्य अन्यम् दूसरे मनुष्य के साथ अभिहर्यत ऐसा व्यवहार करे इव जैसे अध्न्या गाय जातम् नवजात वत्सम् बछड़े के साथ करती है। प्रेम व प्रीति का इससे अधिक सुंदर उदाहरण शायद कहीं भी देखने को नहीं मिलता। गाय अपनी जीभ से अपने नवजात बछड़े के शरीर से मल छुड़ा कर उसे साफ कर देती है और फिर साफ करने के बाद मलमुक्त करके अपना दुग्धपान करवाती है। इससे सुंदर इससे बड़ा और व्यापक प्रेम को उदाहरण भला और क्या हो सकता है। इससे स्पष्ट निर्देश मिलता है कि प्रीतिपूर्वक व्यवहार में हमें दूसरों के दोष छुड़वाकर उनमें सदगुण भरने हैं यही है दूसरों के साथ प्रीतिपूर्वक व्यवहार ना कि किसी शाराबी के साथ बैठकर शाराब के जाम लगाना अपितु शाराब छुडवाकर अमृत की भांति दुग्धपान करवाना प्रीति या प्रेम पूर्वक व्यवहार की श्रेणी में आता है।

धर्मानुसार व्यवहार में कैसे हमारा आचरण दूसरों के प्रति धर्मानुकूल हो यह जानना अत्यंत आवश्यक है तो इसके लिए सरलतम उपाय है कि जैसा व्यवहार हम अपने जीवन में दूसरों से अपने लिए अपेक्षित करते हैं वैसा ही व्यवहार हम स्वयं उस स्थिति में दूसरों के साथ किया करें। महर्षि देव दयानन्द ने आर्योद्दे या रत्नमाला में मनुष्य को परिभाषित करते हुए स्वआत्मवत व्यवहार को मनुष्य के लिए अनिवार्य गुणों में रखा है। जैसा हम अपने जीवन में दूसरों से व्यवहार चाहते है यदि वैसा दूसरों के साथ करे तो व्यवहार संबंधी कोई समस्या पैदा नहीं होती। अपने कार्यालय में बैठकर अपने पद की भक्तियों का उपयोग करते समय यदि सामने फाइल लेकर खड़े व्यक्ति के साथ व्यवहार करने से पूर्व यदि एक पल के लिए हम स्वयं को उसके स्थान पर खड़ा करके सोचें और फिर जैसा व्यवहार उस स्थिति में हम अपने लिए अपेक्षित करते हों वैसा व्यवहार हम उस समय सामने खड़े व्यक्ति के साथ करें। यदि स्वआत्मवत व्यवहार के धर्मानुसार आचरण को हम अपनी जीवन शैली बना लें तो निश्चित रूप से जीवन में अपने व्यवहार के कारण सफल हो सकते हैं।

यथायोग्य व्यवहार स्वआत्मवत व्यवहार का विस्तार है अर्थात जैसा जिस के लिए अपेक्षित वा योग्य हो। यह अंग्रेजी के टिट फॉर टैट जैसे को तैसा से भिन्न है। इसमें क्रिया की प्रतिक्रिया नहीं आती अपितु जो जैसा है उसको वैसा योग्य उचित व्यवहार आता है। अर्थात दोषी अपराधी को उचित दंड और निर्बल धर्मात्माओं को संरक्षण सत्कार इसी यथायोग्य व्यवहार की श्रेणी में आता है। इस प्रकार यदि हम सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करेंगे तो निश्चित रूप से जीवन में सफलता के सोपान चढ़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पायेंगे।

मो०- ०९४६७६०८६८६

देशवासियों ! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी

पं० नन्दलाल निर्भय,
पत्रकार, भजनोपदेशक

देश धर्म की भेंट चढ़ा दी, अपनी भरी जवानी।
देश वासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।

राणा सांगा ने बाबर को, नाको चेन चबाए।
महाराणा प्रताप शिवाजी, मुगलों से टकराए।।
तेग बहादुर गोविन्द सिंह ने, दुष्टों का मुंह मारा।
बंदा वैरागी नलवा को, मान गया जग सारा।।

दुर्गा रानी किरण मई थी, देश भक्त क्षत्राणी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।१।।

जगत गुरू ऋषि दयानन्द ने, सोया देश जगाया।
आजादी का बिगुल बजाया, योगी घबराया।।
ताँत्या टोपा तुकाराम, नाना को साथ लगाया।
वीर कुंवरसिंह नाहर सिंह ने, भारी युद्ध मचाया।।

लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से, खूब लड़ी मर्दानी।
देशवासियों! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।२।।

वीर सुभाषचन्द्र ने था गोरों का राज हिलाया।
भारत है वीरों की धरती, दुष्टों को दिखलाया।।
विस्मिल शेखर भगत सिंह ने भारी लड़ी लड़ाई।
खुदीराम अशफाक वीर ने, हंसकर फांसी खाई।।

मत झूलो, लंदन में ऊघम की पिस्तौल चलानो।
देशवासियों ! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।३।।

वीरों के बलिदानों से ही, यह आजादी आई।
भारतवीर सपूतों ने भी, कठिन मुशीबत पाई।।
आजादी का महत्व समझ को सभी बहिन अरूभाई।
मिलजुल करके रहना सीखो, इसमें सभी भलाई।।

देश भक्त बलवान बनों तुम, सच्चे ईश्वर ध्यानी।
देशवासियों ! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी

बनो सदाचारी तपधारी, जीवन श्रेष्ठ बनाओ।
गंदी सगति त्यागो प्यारो। जग में आदर पाओ।।
वैदिक धर्मी बनो, देश भारत की शान बढ़ाओ।
नन्दलाल तुम आजादी के मधुर तराने गाओ।

करो देश का ध्यान, छोड़ दो, करनी तुम मनमानी।
देशवासियों। याद करो अब वीरों की कुर्बानी।।५।।

आर्य सदन वहीन जनपद-पलवल (हरि०)
चलभाष- ९८१३८४५७७४

आर्य समाजों को आवश्यक सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाज एवं जिलासभाओं के अधिकारियों को सूचित किया जा रहा है अपने स्तर पर धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधि सम्पन्न होने की सूचना आर्य मित्र में प्रकाशनाथ चित्र सहित भेजकर अपनी सक्रियता का परिचय देते रहें। साथ ही निर्वाचन की कार्यवाही भी समय-समय पर भेजते रहें।

विद्वान लेखकों से अनुरोध

आपके स्नेहिल आशीर्वाद से आर्य मित्र सुन्दर प्रकाशित हो रहा है। यदि आपका चिन्तन लेख अथवा कविता के रूप में प्रकाशनार्थ प्राप्त हो जाये तो हमारा सौभाग्य होगा। सुविधानुसार डाक/ई-मेल पर भी भेज सकते हैं, मैं इसकी प्रतीक्षा करूंगा।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., लखनऊ

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७- आर्यमित्र ०४ जुलाई, २०१७ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-१८ एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४९२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....
.....

आओ ईश्वर के निकट चलें

उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि।। सामवेदः मन्त्र-१४

पदार्थ :- (अग्ने) हे पवित्रस्वरूप ज्ञानप्रदाता मार्गदर्शक परमेश्वर! (वयम्) हम लोग (धिया) मन से (नमः भरन्तः) नमन करते हुए (दिवे दिवे) प्रतिदिन (दोषावस्तः) सायं और प्रातः (त्वा) आपके (उप एमसि) निकट आते रहें।

पवित्र होते रहें

ईश्वर की उपासना के लिए मन का पवित्र रहना आवश्यक है। मन में किसी के प्रति दुर्भावना न आए। असत्य, चोरी, द्वेष, हिंसा आदि का अशुभ सकल्प न उठे। स्वार्थ, अभिमान, नास्तिकता और प्रमाद भी मन में न आए।

अग्निः पवित्रं स मां पुनातु। (निरुक्तः अध्याय-५ खण्ड-६)

अग्नि अर्थात् ईश्वर पवित्र है, वह मुझे भी पवित्र करे। शास्त्रों में अधिकांश वचन इसीलिए हैं ताकि मनुष्य का मन पवित्र बने। समाज के नियम और मर्यादायें भी इसीलिए बनी हैं कि मन की पवित्रता बनी रहे। दण्ड का विधान और वर्जनायें भी इसीलिए हैं कि अन्ततोगत्वा पवित्रता का व्यवहार हो। मनुष्य की मनुष्यता इसी में है कि वह सभी प्राणियों एवं वस्तुओं को पवित्र मन से देखे।

मनुष्य को परिवार में शुद्धता से रहना चाहिए। व्यवसाय, समाज और समूहों में भी शुद्धता की अपेक्षा रहती है। पवित्रता मनुष्य के सार्वभौम व्रतों में आती है। इसका आचरण सभी स्थानों एवं अवसरों पर होना चाहिए। ईश्वर की उपासना का तो यह आधार ही है। इस मार्ग पर पवित्रता के बिना एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता। अतः हम निरन्तर चिन्तन करते हुए अधिकाधिक पवित्र होते रहें।

किसके निकट किससे दूर

तद्दूरे तद्वन्तिके। (यजुर्वेदः अध्याय-४०, मन्त्र-५)

अर्थात् ईश्वर निकट भी है और दूर भी। प्रश्न उठता है कि वह किसके निकट और किससे दूर है?

ईश्वर सर्वव्यापक है, सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है, वह अन्तर्यामी है, प्रत्येक जड़ एवं चेतन के भीतर भी विद्यमान है। वह पृथ्वी आदि समस्त पिण्डों, इनके मध्य के अन्तरिक्ष, पिण्डों पर उपस्थित जल, अग्नि, वायु एवं आकाश में विद्यमान है। सब प्राणियों के शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा में भी विद्यमान है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उसी ईश्वर में स्थित है। वह सबके बाहर भी है और सबके भीतर भी।

सबके बाहर एवं भीतर होने के कारण ईश्वर सदा सबके निकट है। फिर उसे दूर बताने का क्या अभिप्राय है?वस्तुतः ईश्वर निराकार है। उसका अनुभव इन्द्रियों से नहीं होता। आत्मा में ही उसकी अनुभूति होती है। कोई व्यक्ति ईश्वर के आनन्द को पूरी तरह लेना चाहे तो निर्बाध रूप से ले सकता है। इसी प्रकार कोई उसकी निन्दा करना चाहे, उपासना न करना चाहे, अनुभूति न कराना चाहे, समझना न चाहे, मानना न चाहे और नास्तिक होकर ही रहना चाहे तो ऐसे भी रह सकता है। जो मनुष्य धार्मिक विद्वान है, वह ईश्वर का स्मरण करने और उपासना में आनन्द की अनुभूति करने के कारण ईश्वर के निकट है। इसके विपरीत जो व्यक्ति नास्तिक है और ईश्वर की दी हुई वायु, अग्नि, जल एवं अन्न का प्रयोग करते हुए भी उसे स्मरण नहीं करता वह ईश्वर से दूर है।

ईश्वर दूर अथवा निकट नहीं है। मनुष्य ही अपनी पवित्रता, सत्य एवं विद्या के कारण उसके निकट और अपवित्रता, असत्य एवं अविद्या के कारण उससे दूर रहता है। हम भी सही दिशा में एवं सन्मार्ग पर चलकर उसके निकट बने रहें।

दिन-प्रतिदिन निकटतर

विद्या एवं उपासना का मार्ग मोक्ष तक पहुँचकर पूर्ण होता है। इस पर निरन्तर उन्नति अभीष्ट है तो प्रतिदिन प्रयत्न करने से होती है। नीतिकार का उपदेश है -

अबन्ध्यं दिवसं कुर्याद् दानाध्ययनकर्मभिः।
(चाणक्य नीतिः अध्याय-२, श्लोक-१३)

अर्थात् अध्ययन, दान एवं अन्य कर्म करते हुए प्रत्येक दिवस को सार्थक करें। जिस प्रकार एक-एक ईट रखकर विशाल भवन तैयार होता है उसी प्रकार प्रत्येक दिवस को ईट की भाँति सार्थक बनाकर जीवन रूपी भवन का निर्माण होता है।

प्रतिक्षण अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह (पाँच यम) और यथासम्भव शौच, सन्तोष, तपः, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान (पाँच नियम) का पालन करते हुए उपासक प्रतिदिन ईश्वर के निकटतर होता जात है। यह निरन्तर साधना एवं सावधानी का मार्ग है। जैसे तिल-तिल चलती चींटी लम्बी दूरी तय कर लेती, बूँद-बूँद जल से घड़ा भर जाता और बाल-बाल बढ़ता पौधा एक दिन विशाल वृक्ष बन जाता है, इसी प्रकार निरन्तर यम-नियम आदि के पालन से आत्मज्ञानी साधक की उपासना सिद्ध हो जाती और मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

-डॉ० रूपचन्द्र 'दीपक'
आर्य समाज श्रृंगारनगर,
लखनऊ-२२६००५
मो०- ६८३६१८१६६०

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ-गढ़मुक्तेश्वर हापुड़ (उ.प्र.) में प्रवेश प्रारम्भ

गंगा किनारे गढ़मुक्तेश्वर के निकट गुरूकुल म.वि. पूठ में प्रवेश प्रारम्भ है। यहाँ शान्त वातावरण हैं। उ.प्र. मा.सं.शि. परिषद लखनऊ द्वारा माध्यमिक एवं सं. स.वि.वि. वाराणसी से आचार्य तक मान्यता प्राप्त है आदर्श गोशाला का शुद्ध दूध एवं योग्य शिक्षकों द्वारा कड़ा अनुशासन पढ़ाई की सुन्दर व्यवस्था है।

धनुर्विद्या सिखाने की व्यवस्था है आर्य वीर दल की शाखा द्वारा व्यायाम प्रशिक्षण केन्द्र के साथ साथ संस्कार प्रशिक्षण की भी सुन्दर व्यवस्था है। प्रवेश परीक्षण के बाद ही प्रवेश होगा नियमावली मंगाकर शीघ्रता करें।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
संचालक
६८३७४०२१६२

आचार्य राजीव
प्राचार्य
६४१०६३८४४४

आचार्य दिनेश
व्यवस्थापक
६४११०२६७७५

अखिलानन्द
अधिष्ठाता

प्रवेश सूचना

प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से ओत-प्रोत शान्त सुरम्य वातावरण में योग्यतम अध्यापकों द्वारा अध्यापन, निःशुल्क छात्रावास, भोजन की उत्तम व्यवस्था से युक्त ''आर्य गुरुकुल उ.मा./महा विद्यालय, सिरसागंज, फिरोजाबाद'' उ.प्र. में प्रथमा (६-७-८) से लेकर आचार्य (एम.ए.) पर्यन्त कक्षाओं में योग्यता परीक्षा/ अनिवार्य योग्यता के आधार पर प्रवेश प्रारम्भ है। छात्र की आयु न्यूनतम १० वर्ष होनी चाहिए। पाठ्यक्रम में राज्य सरकार द्वारा निर्धारित समस्त विषय सम्मिलित हैं।

सम्पर्क सूत्र- ६४११४३६७४१, ८७६१५०६३८५

प्राचार्य/प्रबन्धक

स्थापित-१९०६

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (सासनी) हाथरस

पत्रालय-कन्या गुरुकुल, पिन-२०४१०४, जिला-हाथरस (उ.प्र.)

प्रवेश प्रारम्भ सत्र-2017-18

- कक्षा शिशु से कक्षा नवम् तक।
- विद्याविनोद प्रथम वर्ष (११) तथा उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष (११)
- विद्यालंकार/वेदालंकार (समकक्ष बी.ए.ऑनर्स), तथा शास्त्री (समकक्ष बी.ए.) प्रथम वर्ष।
- आचार्य प्रथम वर्ष।
- विद्याविनोद (समकक्ष इण्टरमीडिएट) तक विज्ञान वर्ग की शिक्षण व्यवस्था।
- प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद की गायन, वादन में संगीत प्रभाकर तक शिक्षण व्यवस्था।
- कन्या गुरुकुल निजी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र (आई.टी.आई.) में कोपा (Computer Operater and Programming Assistant) एवं स्विंग टेक्नोलॉजी (Swing Technology) का एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम है कन्या गुरूकुल निजी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र एन.सी.बी.टी. द्वारा मान्यता प्राप्त है।

मोबाइल-09258040119, 08006340583, 09927991922, 09458480781
ईमेल-kanyagurukulmhv.hathras@gmail.com
www.kanyagurukul.in

डॉ. श्रीमती पवित्रा विद्यालंकार
मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक-आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक-श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।